

अष्टम अक्षर	2997	
-------------	------	--

श्री गुरु नानक
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो

ॐ नमः श्रीरुद्रकाय्ये ॥ श्रीद्यूवाच ॥ महाकोटूहलकिंच
उक्तिमकिप्रदेगथा ॥ तानाह यहनं अष्टवं चावापि कनं शुभं ॥ क
नसामुपरात्तामिकृपया च दमास्तं ॥ श्रीनीलश्रीवउवाच ॥
धूम्रविष्वक्नेद्यानां वधारथकृतवाहनं ॥ श्रीमङ्गीरुद्रकाय्यामुक्तं
वेद्यनमाहुतं ॥ शृणु विप्रवक्षामि उच्चैर्ब्रुवन्तं महत् ॥ एतापनी

यप्रयत्ननएमनीयंपून४पून४॥एमनीयंएमनीयंएमपय
माहजालवत्॥ॐअस्यशीरुकात्यामुकवचमपिहार्गवध
दामुऊगतीप्राकादवतावदकालिका॥कौवीउंभकिउंप्राक
कीलकमवच॥धर्मार्थकाममार्गपविनियाग४प्रकीर्त
कौहदिर्कोभिनप्राकंकुंभिरवायांउविन्यसुत्॥कैकानकवच

कयंकौचनप्रप्रयंतथा॥ममुक४निति विरुयंन्यासकालंवि
निहा॥मथेवकनन्यासंचसर्वदहसुचिर्कवत्॥॥ध्यान॥
ऊनादिसिहंदविंभवयग्मविकर्षका॥उऊषाउभसंयूका
नानाप्रह्महार्यता॥दूधयापीतितांनिश्यांमृगुमालालंकरां
नंदलखीमहादीर्घांअतिपाभविनाकितां॥नमोंकुआदनां

लीमां. ऊपाहृपां प्रिभंवकां॥ नागहनंललजिह्वांचिनयहृदका
लिकां॥ ॥ नूद्रोपाउरुडकाली. ललाटललजिह्वाकाशानयपा
उसदाकृष्ण. नाभिकायांभिवप्रिया॥ जिह्वायांउवनप्रसीक
रुपाउरुडिका॥ ग्रीवायांनरुचामुखा. हृदयम्भभानवासिनी
॥ नाहोनरुकूलभीच. उदनचमूर्धिका॥ गुसनरुनुगुसभी

॥ शोणगवनीचमां॥ उत्रोपाउउरुडकभी. जान्वाकल्याणदासदा॥
॥ घचजिह्वाप्ररु. पादोपायातिनंजता॥ कूक्षोदवाधिदवभी. य
॥ चरववत्तु॥ उजोऊयप्रदापाउ. कना. यकडकीचमां॥ भक्ति
नीकालनापीच. प्रिवक्ष्मभाददायदा॥ सर्वाक्षभूलक्षकपाउ. पं
चब्धिपूतोकरदा॥ दिग्विदिहमहामानी. पाउमाभनगंमूदा॥

ॐ शत एतमं गुप्तं प्रेलावतमकानकं ॥ च उर्वर्गप्रदं निश्चयं तीर्थ
रुद्र प्रदं ॥ सर्वदानरुद्रं चैव सर्वयज्ञरुद्रं तथा ॥ ॐ गियाग
रुद्र पाकं सर्वसा प्राश्नदायकं ॥ मृदु सिद्धिप्रदं ह्यत्र प्रदुर्ममसि
हृदायकं ॥ वरुणाय किमूकं न चिकामसि निवापनं ॥ प्रकल्प
० तदा वि. कलानाह निष्ठा ॥ ॥ ह्यं ह्यं पून ४ ह्यं ह्यं ह्यं

पून ४ पून ४ ॥ एतपनीयं महाकायं ॥ एतपनीयं महाकायं ॥ ह्यं ह्यं
मिथ्यादि नारुतापनाम ह्यं ॥ ॥ अकिनी उ ह्यं ता ला ४ या गिनी दा क
रुद्र नाभा न सर्वविलयं या निष्ठा ० मायदा ह्यं ह्यं ॥ नाग एतक ह्यं ह्यं
ह्यं ह्यं ॥ पदवेनामकं ॥ सर्वयज्ञमा प्राणि ह्यं ह्यं न संभयदा ॥
ह्यं मिषाय ह्यं ह्यं दातव्यं कवचं ॥ ॥ २५ ॥ ॐ गिनी महाका

हं संहिता कथी रूद्र काली कवचं समाप्य ॥ ॥

मूढ रूद्र काली पूजा ॥ न्यास ॥ कौंठ दयादि कन छठं गन्या सथा ॥ हं
रूद्राय रुद्र न्यास ॥ न्यास ॥ आध्यादि ॥

ध्यानं ॥ हं ह्रीं कामा काटना क्षीमसि मिलित मूखी मूक कभी नूदकी
ना हं रूपावदनी रुगदखिल मिदं ग्राह्य मेकं कनामि ॥ हं ह्रीं ह्रीं

ध्यानयनी कल दन लभिरा सन्निहं पाभमयं दने कं मू रूला
रूद्र परिहृत्त उहयं पाठुमां रूद्र काली ॥ ध्यान पूषा ॥ पाशादि ॥
यं कति ॥ हौं कालि म हा कालि कालि कालि रुद्र स्वाहा ॥ रुपा ॥ ह्रीं
॥ रुद्र की मंगला काली ॥ सर्वदक्षिण काली वरु ॥ ॥
ध्यान काली म ॥ उं दुं दुं कौं कौं पशु नृ राक्षस रुद्र ॥ ॥

॥ अथऽनंभुहेनवपूजा ॥ कौंदर्यादिकनघठंगन्यासः ॥ आसु
नो ॥ उँ ह्रीं म हा प्र ता स न श्री पा पू ॥ आ वा हु नं ॥ यः सः सः पा ना प नं द
वं स्व ग रुं स्व स नू पि सं ॥ सोम सूर्य पथा क रुं च द्रु हि प न म
न ॥ ॥ ध्या नं ॥ ध्या य इ वं म हा का यं धि रा ग उ ऊ गा स नं ॥ का टी नू द
य स का भं पंच व कुं म हा रुं ॥ प्र ति व कुं धि त य नं ता गा ए न स ह पि

नं ॥ दि गु के वि ध तं भ मुं द रु वा म वि रा ग न शा म हा सिं का प्य मा हा
व भू धि ना ग क पा ल कं ॥ अ नं द रु ध ता वा म र व र स्व हां ग पा भ कं
॥ क ल भं च म हा पा उं नि य म ति वि ना जि ता ॥ दं द्रु क ना ल व द नं
द वा नी सां ह य प्र दं ॥ त फ जा नू त दा हा स मू र्ध नं दि गं च नं ॥ अ
वं धा स्वा य ऊ द व मू न्म इ हे न वं च नं ॥ ध्या न पू षां त म शा आ वा हु

पितृमन्त्रं हे नवं लपानि ख दां ख भ हं म न क स ह न
दयपालं नमामि॥

२२२

स्वर्ग स्वर्गी लोकोत्त
अत्र लोकोत्त

आशा चरित्र

ASHA / CHITR

2997



ॐ नमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ दय्युवाच ॥ कवचं देवदेवमस्मिन्
 श्यामनाममं ॥ कथयस्व मया दानां स्निहं मया दितिवृत्ति ॥ भिव
 उवाच ॥ मृशं ननु कवचं सिद्धिविद्यासमं पत्रं ॥ तथापि क
 थयाम्यतः स्वीया तव वनानन ॥ कवचस्यास्य देवमिष्टिर्नो
 नाय ॥ ३५ ॥ पंक्तिर्कन्दो देवता च वा स्मरूपास्तनस्वगी ॥ ध

मर्मार्थकाममादृष्विनिर्गतागप्रकीर्तिताशापाउममस्तक
 निर्यंदवीचेकादनीपना॥ददयंपाउमसाचवाकनंस्वंगद
 नीपना॥वदवाग्दनीस्वाहानाहिंपाउदभादनी॥
 उवनापाउसुदभादनी॥मयीउदभा॥जेनमाहगवतीपाउपददं
 दंमदाममा॥वदवाग्दनीस्वाहासर्वोदंममदावउ॥षाउभा

चमहाविद्या वपनं मसदावउ॥ जै ह्रीं जै ह्रीं उं सत्रस्त्रे नमः
 त्रैलोक्यादभा कृती॥ विज्ञानास्त्रीरुडुम सुदाविरववर्द्धिनी॥ द
 वीमडाचत्रैलाब्ध चन्दिगाभुरदायिनी॥ जै वाचस्पति मृतं प्रीति
 प्रविशेकाचदभा कृती॥ निश्चानन्दमयीपाया स्तिष्ठिविद्यासत्र
 स्वगी॥ सर्वगं पाठुमनिश्च नातालेकान्तप्रिया॥ ॐ न्द्रायामस्तुक

लादवाः पूर्वोदिदम्दिदम्॥ नाना रूपधनानि श्या. स्फुला सुश्र
स्वनात्मिका॥ गजद्वान्दुर्गमच. पाउमां सर्वतामदा॥ ॐतिगं क
थितंदवि. कवचं उविद्वर्त्तं॥ पणित्वाधमयित्वाच. रहस्यनि
निवापनश॥ गजपशमयी वाही. वकुलस्यनसंभयश॥ तंदृष्टा
पष्ठित॥ अशु. लयमागच्छति क्वं॥ कायव्यासमयाधीमान्

तत्रैषां काम प्रवच ॥ गमय न चैव गंधर्वा नानाभाम्बु विष्णु मंद ॥
यश्च स हृत्पय ॥ ० दत्त क्व चंद विदुर्हं ॥ यश्च स हृत्पय निचि कृत
तद्गुह्यवति निश्चितं ॥ अष्टा कृत भक्त नैव पूनश्च न समान हंता ॥ द
भंभक्तान् कर्मणि यश्चादीनि महंभुने ॥ तनापि सिद्धि क वचा
दत्त हृत्पय न संभय ॥ सर्वदा वभामाया कि ऊना हृत्पय सदा उचि ॥

उत्तर हृत्पय विहीनाय दृष्टाय च दूनात्मन ॥ लोक हिंसा न तार्ये व
हृत्पय प्राय महंभुनि ॥ हृदस्मान्नाय पापय निन्द काय कदाचन
॥ नदातव्यं नदातव्यं सृष्टं सृष्टं वना नन ॥ भिष्यत्या हृत्पय कृत्वा
वेष्वत्पय विष्णु मंद ॥ दातव्यं क्व चंद हृदं पिषूला कषदुर्हं ॥
॥ २१ ॥ ॥ नृति श्री नील सनख गीत कुंद वीभुन संवाद सनख नीक

वचंसमाप्तं ॥ ॥







